दिनांक 12 जनवरी, 2015 को बरियातु में 12%00 बजे स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के अवसर पर विकास भारती द्वारा कौशल विकास, स्वच्छता एवं सामाजिक समरसता अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम के अवसर पर माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

आज युगद्रष्टा परम श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में उनकी जयंती को युवा दिवस के रूप में पूरे उत्साह तथा उमंग के साथ मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम मैं स्वामी विवेकानन्द जी को नमन करती हूँ और उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा-सुमन अर्पित करती हूँ। मुझे खुशी है कि स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के पुण्य अवसर पर ही प्रसिद्ध स्वयंसेवी संस्था विकास भारती बिशुनपुर द्वारा राज्य के गाँव-गाँव में युवा कौशल, स्वच्छता एवं सामाजिक समरसता जैसे नेक व पुनीत अभियान आरंभ किया जा रहा है। यह जानकर मुझे खुशी हो रही है कि आज ही के दिन विकास भारती बिशुनपुर की भी स्थापना हुई थी। संस्था के स्थापना दिवस के अवसर पर समाज को अपना जीवन समर्पित करने वाले इसके सचिव

पद्मश्री श्री अशोक भगत जी सहित संस्था से जुड़े सभी सदस्यगणों को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि आप सभी आगे और तेज गति से समाज के विकास के लिए प्रयासरत रहेंगे।

आज परम श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के अवसर पर मैं उनके सन्दर्भ में कुछ कहना चाहूँगी। स्वामी जी केवल एक महान संत ही नहीं थे, बल्कि वे एक महान देशभक्त, विचारक, युगद्रष्टा, वक्ता, लेखक और मानव–कल्याण के प्रेमी थे। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्रोत भी बने। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था कि "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक नहीं।''

स्वामी विवेकानन्द जी से संबंधित एक छोटी सी बात मैं कहना चाहती हूँ। आप लोग 9@11 **(Nine Eleven)** के बारे में जानते होंगे और अधिकांश लोगों का मन 9@11 का अर्थ सिर्फ अमेरिका के **World Trade Centre** के दो

टॉवर की ओर जाता है। आज से करीब सवा सौ वर्ष पूर्व 1893 में 9@11 को कुछ ऐसी घटना घटी थी, जिसमें भारत का एक दूत अपने संबोधन से विश्वपटल पर छा गया था। शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द जी का ओजस्वी संबोधन ''अमेरिका के मेरे भाइयों एवं बहनों''– ये शब्द पूरे सम्मेलन को तालियों के गड़गड़ाहट में देर तक गूँजाता रहा। आज हम सभी उसी महान भारत के महान संतान की स्मृति में आयोजित इस सभा में सम्मिलित हैं।

स्वामी विवेकान्द जी युवाओं के सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे। वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करें, उनका चरित्र निर्माण करें, उनमें समाज सेवा की भावना विकसित करें तथा जो शेर जैसा साहस पैदा करें। उनके कथन– ''उठो, जागो और तब तक न रूको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाय'' युवाओं में नव संचार की भावना प्रबल करता है। स्वामी जी व्यवहारिक शिक्षा के पक्षधर थे और इसे मानव के

लिए उपयोगी मानते थे। उनका कहना था व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है। स्वामी जी के शब्दों में, "तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यवहारिक **(Practical)** बनना पड़ेगा।" वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे युवाओं का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास हो। शिक्षा ऐसी हो जिससे मानव के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा वे आत्मनिर्भर बने। वे बालक–बालिकाओं के समान शिक्षा के पक्षधर थे। उनका कहना था गुरू–शिष्य संबंध मधुर होना चाहिये। वे कहते थे कि सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जाय। उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था पर ध्यान दिये जाने पर भी बल दिया।

मुझे खुशी है कि प्रसिद्ध स्वयंसेवी संस्था विकास भारती द्वारा स्वामी विवेकानन्द जी के इस सपने को साकार अथवा मूर्त्त रूप प्रदान करने की दिशा में आज सार्थक प्रयास किया जा रहा है। युवाओं के कौशल विकास की दिशा में एक अभियान बनाकर

कार्य किये जाने की नेक इरादे एवं सोच है। किसी भी देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए कौशल और ज्ञान आवश्यक है। वैश्वीकरण के इस युग में अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने हेतु युवाओं के कौशल विकास पर ध्यान देना जरूरी है। भारत राष्ट्र के पास एक विशाल मानव सम्पदा है, जिसमें युवाओं की संख्या अधिसंख्य है। इस युवा आबादी में निहित प्रतिभा को विकसित कर एवं उनके कौशल विकास पर ध्यान देकर आर्थिक व सामाजिक विकास किया जा सकता है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री महोदय युवाओं के कौशल विकास हेतु अत्यंत गंभीर है और इस निमित्त योजना संचालित है। सबके सहयोग से एवं इस योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार से अधिक-से-अधिक युवाओं को रोजगार से जोड़ा जा सकता है।

हर्ष की बात है कि विकास भारती द्वारा विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से अधिक-से-अधिक ग्रामों में आज से प्रारंभ भारत रत्न बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेदकर जी की जयंती तक चलनेवाली युवा कौशल

विकास के साथ–साथ स्वच्छता एवं सामाजिक समरसता अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। हमारे प्रधानमंत्री महोदय स्वच्छ भारत अभियान की सफलता के प्रति अत्यंत गंभीर है। उनके इस महत्वाकांक्षी योजना को सफल बनाने के लिए जन–जन की भागीदारी अहम है। सबको स्वच्छता के प्रति जागरूक कर ही इस योजना को सफल बनाया जा सकता है। मैं सभी से आह्वान करती हूँ कि वे स्वच्छता के प्रति सचेष्ट हों तथा अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रखने हेतु सदैव प्रयासरत रहें। कहा जाता है– " **A healthy mind lives in a healthy body**'' अर्थात स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

जहाँ तक सामाजिक समरसता की बात है। भारत पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग आपसी भाईचारे की भावना के साथ निवास करते हैं। हमारी एकता "वसुधैव कुटुम्बकम्'' पर आधारित है। विविधता में एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करनेवाला राष्ट्र है।

राष्ट्र में सामाजिक समरसता की भावना बनी रहे, आपसी भाईचारे की भावना के तहत सभी खुशीपूर्वक जीवन जीयें। मुझे कहने में खुशी हो रही है कि हमारे राज्य ही नहीं, पूरे देश में होली, दशहरा, ईद, क्रिसमस, गुरू पर्व, सरहूल सभी धर्म व सम्प्रदाय के लोग आपसी भाईचारे की भावना से मनाते हैं। ये सामाजिक समरसता की ही पहचान है।

मैं विकास भारती द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से आज से भारत रत्न बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेदकर की जयंती तक चलनेवाली युवा कौशल विकास, स्वच्छता एवं सामाजिक समरसता अभियान के सफलता की कामना करती हूँ तथा राज्य एवं राष्ट्र की तीव्र गति से उन्नति की कामना करती हूँ।

जय हिन्द!